संविधान का निर्माण

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» संविधान का परिचय और निर्माण की पृष्ठभूमि

प्रश्न 1 (आसान). भारतीय संविधान कब लागू हुआ?
उत्तर – 26 जनवरी 1950 को।

प्रश्न 2 (आसान). संविधान निर्माण में कुल कितने वर्ष लगे?
उत्तर – लगभग 3 वर्ष (दिसंबर 1946 से नवंबर 1949 तक)।

प्रश्न 3 (मध्यम). संविधान को दुनिया का सबसे लंबा संविधान क्यों कहा जाता है?
उत्तर – भारत के विशाल आकार, उसकी विविधता (विभिन्न भाषाएँ, धर्म) और आज़ादी के समय की जटिल सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों को देखते हुए एक विस्तृत और गहन संविधान की आवश्यकता थी।

प्रश्न 4 (कठिन). आज़ादी के समय भारत की किन दो मुख्य समस्याओं ने संविधान निर्माताओं के लिए चुनौतियाँ खड़ी कीं?
उत्तर – देश का विभाजन और उसके कारण हुई हिंसा व विस्थापन, तथा देसी रियासतों का भारत में विलय एक बड़ी चुनौती थी। इसके अलावा, समाज में व्याप्त ऊँच-नीच और विभिन्न समुदायों के बीच एकता स्थापित करना भी मुश्किल था।

» स्वतंत्रता पूर्व उथल-पुथल का दौर

प्रश्न 5 (आसान). भारत छोड़ो आंदोलन किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1942 में।

प्रश्न 6 (आसान). 1946 में कौन सा बड़ा सैन्य विद्रोह हुआ था?
उत्तर – शाही भारतीय नौसेना विद्रोह।

प्रश्न 7 (मध्यम). आज़ादी से पहले हुई सांप्रदायिक हिंसा ने संविधान निर्माण को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – इस हिंसा ने संविधान निर्माताओं को धर्मनिरपेक्षता और सभी नागरिकों के लिए समानता वाले कानूनों की आवश्यकता महसूस कराई।

प्रश्न 8 (कठिन). देसी रियासतों की समस्या क्या थी और इसे संविधान निर्माण के संदर्भ में क्यों महत्वपूर्ण माना गया?
उत्तर – देसी रियासतें ब्रिटिश शासन के बाद स्वतंत्र रहने या अपनी मर्ज़ी से भारत या पाकिस्तान में शामिल होने का विकल्प चुन सकती थीं। यह समस्या देश की एकता और अखंडता के लिए खतरा थी, इसलिए संविधान में ऐसा ढाँचा तैयार करना पड़ा जिससे ये रियासतें भारत में शामिल हो सकें और एक मज़बूत राष्ट्र बन सके।

» संविधान सभा का गठन और कार्यप्रणाली

प्रश्न 9 (आसान). संविधान सभा के सदस्यों का चुनाव कैसे हुआ था?
उत्तर – प्रांतीय संसदों द्वारा।

प्रश्न 10 (आसान). संविधान सभा में किस राजनीतिक दल का सबसे ज़्यादा प्रभाव था?
उत्तर – कांग्रेस पार्टी का।

प्रश्न 11 (मध्यम). मुस्लिम लीग ने संविधान सभा का बहिष्कार क्यों किया था?
उत्तर – क्योंकि वे अलग पाकिस्तान चाहते थे और उन्हें लगा कि संविधान सभा उनकी इस मांग को पूरा नहीं करेगी। वे अपना अलग संविधान बनाना चाहते थे।

प्रश्न 12 (कठिन). संविधान सभा की कार्यप्रणाली पर जनमत का क्या प्रभाव पड़ता था?
उत्तर – संविधान सभा में होने वाली बहसें अख़बारों में छपती थीं, जिन पर जनता अपनी राय देती थी। जनता के सुझाव भी आमंत्रित किए जाते थे, जिससे अलग-अलग मुद्दों पर सहमति या असहमति बनती थी और संविधान सभा के फैसलों पर इसका गहरा असर पड़ता था।

» संविधान निर्माण में प्रमुख आवाज़ें और नेतृत्व

प्रश्न 13 (आसान). उद्देश्य प्रस्ताव किसने पेश किया था?
उत्तर – जवाहरलाल नेहरू

प्रश्न 14 (आसान). संविधान सभा के अध्यक्ष कौन थे?
उत्तर – डॉ. राजेंद्र प्रसाद

प्रश्न 15 (मध्यम). सरदार वल्लभभाई पटेल का संविधान निर्माण में क्या योगदान था?
उत्तर – उन्होंने विरोधी विचारों में सहमति बनाने और कई रिपोर्टों का प्रारूप तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रश्न 16 (कठिन). बी.एन. राव और एस.एन. मुखर्जी की भूमिकाएं किन मायनों में एक-दूसरे से भिन्न थीं?
उत्तर – बी.एन. राव संवैधानिक सलाहकार थे, जो अन्य देशों के संविधानों का अध्ययन कर जानकारी देते थे। एस.एन. मुखर्जी मुख्य योजनाकार थे, जो जटिल प्रस्तावों को स्पष्ट कानूनी भाषा में लिखते थे।

» संविधान की दृष्टि: उद्देश्य प्रस्ताव

प्रश्न 17 (आसान). 'उद्देश्य प्रस्ताव' किसने प्रस्तुत किया था?
उत्तर – पंडित जवाहरलाल नेहरू ने।

प्रश्न 18 (आसान). यह प्रस्ताव संविधान सभा में किस तारीख को प्रस्तुत किया गया था?
उत्तर – 13 दिसंबर 1946 को।

प्रश्न 19 (मध्यम). 'उद्देश्य प्रस्ताव' में भारत को किस प्रकार का राज्य घोषित किया गया था?
उत्तर – एक 'स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य'।

प्रश्न 20 (कठिन). 'उद्देश्य प्रस्ताव' में नागरिकों को किन प्रमुख अधिकारों का आश्वासन दिया गया था? कोई तीन अधिकार बताएं।
उत्तर – न्याय, समानता और स्वतंत्रता।

» संविधान सभा की संप्रभुता और जन इच्छा

प्रश्न 21 (आसान). संविधान सभा पर ब्रिटिश प्रभाव का आरोप किसने लगाया था?
उत्तर – सोमनाथ लाहिड़ी ने।

प्रश्न 22 (आसान). नेहरू जी के अनुसार संविधान सभा को शक्ति कहाँ से मिलती है?
उत्तर – भारत की जनता की इच्छा से।

प्रश्न 23 (मध्यम). सोमनाथ लाहिड़ी ने अपने आरोपों के समर्थन में क्या तर्क दिए थे?
उत्तर – उन्होंने कहा था कि अंग्रेज अभी भी भारत में थे, और अंतरिम सरकार भी वायसराय व ब्रिटिश सरकार की देखरेख में काम कर रही थी, इसलिए संविधान सभा अंग्रेजों की योजना को साकार कर रही है।

प्रश्न 24 (कठिन). नेहरू जी ने 'सरकारें सरकारी कागजों से नहीं बनतीं' कहकर क्या समझाना चाहा था?
उत्तर – उन्होंने यह समझाना चाहा था कि किसी भी सरकार या संस्था की असली वैधता और शक्ति कागज़ी नियमों या बाहरी ताक़त से नहीं, बल्कि उस जनता की मर्ज़ी और समर्थन से आती है जिसके लिए वह काम करती है। यह संविधान सभा की संप्रभुता का मूल आधार है।

» प्रतिनिधित्व और अधिकारों का निर्धारण

प्रश्न 25 (आसान). संविधान सभा में 'प्रतिनिधित्व और अधिकारों के निर्धारण' से क्या अभिप्राय है?
उत्तर – इसका मतलब था कि नए संविधान में सभी नागरिकों, ख़ासकर उत्पीड़ित समूहों और अल्पसंख्यकों के अधिकार कैसे तय किए जाएँगे और उन्हें शासन में कैसे जगह मिलेगी.

प्रश्न 26 (आसान). अल्पसंख्यक कौन होते हैं?
उत्तर – अल्पसंख्यक वे समुदाय होते हैं जिनकी संख्या किसी देश या क्षेत्र में अन्य समुदायों की तुलना में कम होती है.

प्रश्न 27 (मध्यम). संविधान निर्माताओं के सामने नागरिकों के अधिकारों को लेकर कौन सी बड़ी चुनौती थी?
उत्तर – सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि कैसे सभी विविध समूहों की आकांक्षाओं और हितों को समायोजित किया जाए, खासकर यह तय करना कि क्या उत्पीड़ित और अल्पसंख्यक समूहों को विशेष अधिकार मिलने चाहिए, और यदि हाँ, तो कौन से.

प्रश्न 28 (कठिन). संविधान सभा में 'पृथक निर्वाचिका' की माँग के पीछे बी. पोकर बहादुर का क्या तर्क था और गोविन्द वल्लभ पंत ने इसका खंडन किस आधार पर किया?
उत्तर – बी. पोकर बहादुर का तर्क था कि पृथक निर्वाचिका से ही अल्पसंख्यकों को सही प्रतिनिधित्व मिल पाएगा, क्योंकि गैर-मुसलमान उनकी ज़रूरतों को नहीं समझ सकते. गोविन्द वल्लभ पंत ने इसका विरोध करते हुए कहा कि यह आत्मघाती है, अल्पसंख्यकों को स्थायी रूप से अलग-थलग कर देगा, उन्हें कमज़ोर बनाएगा और वे कभी भी राष्ट्र के मुख्य भाग में शामिल नहीं हो पाएँगे.

» पृथक निर्वाचिका का मुद्दा और विरोध

प्रश्न 29 (आसान). संविधान सभा में 'पृथक निर्वाचिका' का समर्थन किस सदस्य ने किया था?
उत्तर – बी. पोकर बहादुर ने।

प्रश्न 30 (आसान). 'पृथक निर्वाचिका' का सबसे बड़ा खतरा राष्ट्रवादी नेताओं को क्या लगा?
उत्तर – राष्ट्रीय एकता और अखंडता का टूटना।

प्रश्न 31 (मध्यम). सरदार पटेल ने 'पृथक निर्वाचिका' को क्या कहकर संबोधित किया?
उत्तर – उन्होंने इसे 'एक विष' कहा, जिसने देश की राजनीति में जहर घोल दिया था।

प्रश्न 32 (कठिन). गोविंद वल्लभ पंत ने 'पृथक निर्वाचिका' को अल्पसंख्यकों के लिए भी क्यों खतरनाक बताया?
उत्तर – उन्होंने कहा कि यह अल्पसंख्यकों को स्थायी रूप से अलग-थलग कर देगी, उन्हें कमजोर बनाएगी और उन्हें कभी भी बड़े राष्ट्रीय समूह का हिस्सा नहीं बनने देगी, जिससे वे कभी प्रभावी योगदान नहीं दे पाएंगे।

» अल्पसंख्यकों की परिभाषा और सामाजिक न्याय

प्रश्न 33 (आसान). एन.जी. रंगा ने 'अल्पसंख्यक' शब्द की व्याख्या किस आधार पर की?
उत्तर – आर्थिक आधार पर

प्रश्न 34 (आसान). एन.जी. रंगा की नज़र में 'असली अल्पसंख्यक' कौन थे?
उत्तर – गरीब, दबे-कुचले लोग और आदिवासी

प्रश्न 35 (मध्यम). रंगा ने संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों की सीमाओं को कैसे बताया?
उत्तर – उन्होंने कहा कि जब तक संविधानसम्मत अधिकारों को लागू करने का प्रभावी इंतज़ाम नहीं होगा, तब तक गरीबों के लिए इन अधिकारों का कोई मतलब नहीं है।

प्रश्न 36 (कठिन). रंगा ने आदिवासियों के शोषण के लिए किनका ज़िक्र किया?
उत्तर – उन्होंने व्यापारियों और सूदखोरों का ज़िक्र किया, जो आदिवासियों की ज़मीन छीन लेते थे और उन्हें गुलामी में धकेल देते थे।

» दलितों के अधिकार और अस्पृश्यता उन्मूलन

प्रश्न 37 (आसान). दलितों के अधिकारों के लिए मुख्य रूप से किस नेता ने आवाज़ उठाई?
उत्तर – डॉ. बी.आर. अंबेडकर

प्रश्न 38 (आसान). अस्पृश्यता का अर्थ क्या है?
उत्तर – जाति के आधार पर भेदभाव और किसी को 'अछूत' मानना।

प्रश्न 39 (मध्यम). दलितों ने संविधान सभा में आरक्षण की मांग क्यों की थी?
उत्तर – सरकारी नौकरियों और विधायिकाओं में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने और सामाजिक व आर्थिक समानता लाने के लिए।

प्रश्न 40 (कठिन). महात्मा गांधी ने पृथक निर्वाचिका का विरोध क्यों किया था, जबकि दलित नेता इसकी मांग कर रहे थे?
उत्तर – गांधी जी का मानना था कि पृथक निर्वाचिका से दलित समुदाय स्थायी रूप से शेष समाज से कट जाएगा और विभाजन बढ़ जाएगा।

» राज्य की शक्तियाँ: केंद्र-राज्य संबंध

प्रश्न 41 (आसान). केंद्रीय सूची के कोई दो विषय बताइए।
उत्तर – रक्षा, विदेश मामले

प्रश्न 42 (आसान). राज्य सूची के कोई दो विषय बताइए।
उत्तर – पुलिस, कृषि

प्रश्न 43 (मध्यम). समवर्ती सूची में किनके अधिकार आते हैं?
उत्तर – केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों के।

प्रश्न 44 (कठिन). संविधान निर्माताओं ने केंद्र को मज़बूत बनाने का फैसला क्यों किया?
उत्तर – देश की एकता और अखंडता बनाए रखने के लिए, सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए, और आर्थिक विकास की योजना बनाने के लिए।

» राष्ट्रीय भाषा का प्रश्न: हिंदी बनाम हिंदुस्तानी

प्रश्न 45 (आसान). महात्मा गांधी किस भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाना चाहते थे?
उत्तर – हिंदुस्तानी

प्रश्न 46 (आसान). हिंदुस्तानी किन दो भाषाओं का मिश्रण थी?
उत्तर – हिंदी और उर्दू

प्रश्न 47 (मध्यम). आर.वी. धुलेकर कौन थे और राष्ट्रीय भाषा के मुद्दे पर उनका क्या स्टैंड था?
उत्तर – आर.वी. धुलेकर संयुक्त प्रांत के कांग्रेसी सदस्य थे और वे हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के कट्टर समर्थक थे।

प्रश्न 48 (कठिन). गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों को हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने से क्या भय था? दुर्गाबाई ने इस बारे में क्या कहा?
उत्तर – गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों को यह भय था कि हिंदी को उन पर थोपा जा रहा है और इससे उनकी अपनी प्रांतीय भाषाओं की जड़ें कमज़ोर हो जाएँगी। श्रीमती जी. दुर्गाबाई ने चिंता व्यक्त की कि इससे गैर-हिंदी भाषी लोगों को लग रहा था कि यह उनकी साझा संस्कृति पर अन्य भाषाओं के प्रभाव को रोकने की कोशिश है, जिससे अशांति और भय पैदा होगा।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. संविधान निर्माण के समय भारत की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति कैसी थी? तीन मुख्य बिंदु बताओ।

› पहला बिंदु: देश का बँटवारा (भारत-पाकिस्तान) हुआ था, जिससे बड़े पैमाने पर हिंसा और लोगों का विस्थापन हो रहा था।

› दूसरा बिंदु: देश में विभिन्न वर्गों, जातियों और समुदायों के बीच गहरे मतभेद थे, जिन्हें एक साथ लाना ज़रूरी था।

› तीसरा बिंदु: ब्रिटिश राज के जाने के बाद लगभग एक-तिहाई भू-भाग पर देसी रियासतें थीं, जिनमें से कई अपनी आज़ादी बनाए रखना चाहती थीं।

उत्तर – संविधान निर्माण के समय भारत विभाजन, सांप्रदायिक दंगों, लाखों लोगों के विस्थापन और देसी रियासतों को भारत में शामिल करने जैसी गंभीर सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों का सामना कर रहा था।

उदाहरण 2. संविधान निर्माण से पहले भारत में कौन सी बड़ी राजनीतिक और सामाजिक चुनौतियाँ थीं, जिन्होंने संविधान निर्माताओं को प्रभावित किया?

› पहला, 'भारत छोड़ो आंदोलन' (1942) ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ देशव्यापी असंतोष दिखाया। लोग आज़ादी के लिए तैयार थे।

› दूसरा, 1946 का 'शाही भारतीय नौसेना विद्रोह' - इसमें सैनिकों ने भी अंग्रेजों के खिलाफ आवाज़ उठाई, जिससे अंग्रेज़ों को लगा कि अब वे भारत पर ज़्यादा समय तक राज नहीं कर सकते।

› तीसरा और सबसे दुखद, 'सांप्रदायिक हिंसा' और 'देश का विभाजन' (1946-47) - इस हिंसा ने दिखा दिया कि हमें सभी धर्मों के लोगों को साथ लेकर चलने वाले मजबूत कानून चाहिए।

› चौथा, 'देसी रियासतों की समस्या' - कई रियासतें भारत में शामिल नहीं होना चाहती थीं, जिससे देश की एकता पर खतरा था। संविधान ने इन सबको जोड़ने का रास्ता दिखाया।

उत्तर – संविधान निर्माण से पहले, भारत में भारत छोड़ो आंदोलन, नौसेना विद्रोह, सांप्रदायिक हिंसा, देश विभाजन और देसी रियासतों के एकीकरण जैसी बड़ी राजनीतिक और सामाजिक चुनौतियाँ थीं। इन सभी ने संविधान निर्माताओं को देश की एकता, धर्मनिरपेक्षता और मजबूत संघीय ढांचे की ज़रूरत का एहसास कराया।

उदाहरण 3. संविधान सभा में कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व क्यों था और मुस्लिम लीग ने इसका बहिष्कार क्यों किया?

› पहला कदम यह समझना है कि 1945-46 के प्रांतीय चुनावों में कांग्रेस ने सामान्य चुनाव क्षेत्रों में बहुत बड़ी जीत हासिल की थी।

› दूसरा, इन प्रांतीय संसदों ने ही संविधान सभा के सदस्यों को चुना था, तो ज़्यादातर चुने हुए सदस्य कांग्रेस से ही थे, जिससे उसका प्रभुत्व बना। लगभग 82% सदस्य कांग्रेस के थे।

› तीसरा, मुस्लिम लीग को मुस्लिम आरक्षित सीटें तो मिलीं, लेकिन उन्हें भारत के विभाजन के बाद एक अलग पाकिस्तान चाहिए था।

› चौथा, मुस्लिम लीग ने महसूस किया कि इस संविधान सभा में उनकी पाकिस्तान की मांग पूरी नहीं होगी, इसलिए उन्होंने बहिष्कार किया और अपना अलग संविधान बनाने पर ज़ोर दिया।

उत्तर – संविधान सभा के चुनाव में कांग्रेस की भारी जीत के कारण उसका प्रभुत्व था (लगभग 82% सदस्य)। मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की अपनी मांग को जारी रखने और एक अलग संविधान बनाने के लिए संविधान सभा का बहिष्कार किया।

उदाहरण 4. संविधान निर्माण में डॉ. बी.आर. अंबेडकर की क्या प्रमुख भूमिका थी?

› पहला कदम: डॉ. अंबेडकर को महात्मा गांधी की सलाह पर केंद्रीय विधि मंत्री का पद दिया गया था।

› दूसरा कदम: इसी भूमिका में उन्होंने 'संविधान की प्रारूप समिति' के अध्यक्ष के रूप में काम किया।

› तीसरा कदम: उन्होंने संविधान का पूरा 'खाका' या 'ड्राफ्ट' तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे बाद में सभा ने पारित किया।

› चौथा कदम: उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि संविधान सभी वर्गों के अधिकारों की रक्षा करे, खासकर दलितों और पिछड़े वर्गों की।

उत्तर – डॉ. बी.आर. अंबेडकर संविधान की प्रारूप समिति (Drafting Committee) के अध्यक्ष थे, और उन्होंने संविधान का मसौदा तैयार करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसके कारण उन्हें 'भारतीय संविधान का जनक' भी कहा जाता है।

उदाहरण 5. संविधान सभा में 'उद्देश्य प्रस्ताव' का क्या महत्व था?

› यह प्रस्ताव 13 दिसंबर 1946 को पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

› इसने स्वतंत्र भारत के संविधान के निर्माण के लिए एक स्पष्ट 'मूल आदर्शों' और 'रूपरेखा' (framework) प्रदान की।

› इसमें भारत को एक 'स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य' घोषित किया गया, जो भारत की नई पहचान थी।

› इसने सभी नागरिकों के लिए 'न्याय, समानता और स्वतंत्रता' सुनिश्चित करने का संकल्प लिया।

› विशेष रूप से 'अल्पसंख्यकों, पिछड़े और जनजातीय क्षेत्रों' के लिए 'सुरक्षात्मक प्रावधानों' का वादा किया गया, जिससे कोई भी वर्ग पीछे न छूटे।

› संक्षेप में, यह प्रस्ताव संविधान सभा के काम के लिए एक 'दिशा-निर्देश' (guiding principle) बन गया, जिसने बताया कि किस तरह का संविधान बनाना है।

उत्तर – 'उद्देश्य प्रस्ताव' ने स्वतंत्र भारत के संविधान के मूल दर्शन, आदर्शों और सिद्धांतों को निर्धारित किया, जिसने संविधान निर्माण के लिए एक स्पष्ट दिशा और आधार प्रदान किया।

उदाहरण 6. संविधान सभा की संप्रभुता पर सोमनाथ लाहिड़ी के विचारों और नेहरू के जवाब को स्पष्ट करें।

› पहला, सोमनाथ लाहिड़ी का मत: उन्होंने आरोप लगाया कि संविधान सभा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रभाव में है, क्योंकि अंग्रेज अभी भी भारत में थे और अंतरिम सरकार भी उनकी देखरेख में काम कर रही थी।

› दूसरा, नेहरू का जवाब: नेहरू जी ने स्वीकार किया कि ब्रिटिश सरकार का गठन में हाथ था, पर उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि संविधान सभा की असली शक्ति का स्रोत 'जनता की इच्छा' है।

› तीसरा, 'जन इच्छा' का महत्व: नेहरू ने कहा कि सरकारें सरकारी कागज़ों से नहीं, बल्कि जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति से बनती हैं, और संविधान सभा जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए है।

उत्तर – सोमनाथ लाहिड़ी ने ब्रिटिश प्रभाव की बात की, लेकिन नेहरू ने स्पष्ट किया कि संविधान सभा की संप्रभुता का मूल भारतीय जनता की इच्छा में निहित है।

उदाहरण 7. संविधान सभा में 'पृथक निर्वाचिका' की माँग का क्या मतलब था और इसका विरोध क्यों हुआ?

› समझें कि 'पृथक निर्वाचिका' का मतलब था कि अल्पसंख्यक समुदाय के लोग अपने प्रतिनिधि सिर्फ़ अपने ही समुदाय के लोगों के वोटों से चुनेंगे.

› मद्रास के बी. पोकर बहादुर जैसे कुछ सदस्य इस माँग के पक्ष में थे. उनका मानना था कि इससे अल्पसंख्यकों को देश के शासन में सही प्रतिनिधित्व मिलेगा.

› ज्यादातर राष्ट्रवादी नेताओं ने इसका विरोध किया, जैसे सरदार पटेल और गोविंद वल्लभ पंत.

› विरोध का मुख्य कारण यह था कि उन्हें लगा कि यह व्यवस्था लोगों को बाँटेगी, देश की एकता के लिए खतरा बनेगी और अंग्रेज़ों की 'बाँटो और राज करो' वाली नीति का हिस्सा थी.

› नेताओं को डर था कि इससे गृहयुद्ध, दंगे और हिंसा बढ़ सकती है, जैसा कि देश के विभाजन के समय देखा गया था.

› उनका तर्क था कि अल्पसंख्यकों को अलग-थलग करने के बजाय उन्हें मुख्यधारा में शामिल करना चाहिए ताकि वे एक बड़े राष्ट्र का अभिन्न अंग बन सकें.

उत्तर – पृथक निर्वाचिका का मतलब था कि अल्पसंख्यक अपने प्रतिनिधि सिर्फ़ अपने समुदाय के वोटों से चुनें. इसका विरोध इसलिए हुआ क्योंकि राष्ट्रवादी नेताओं का मानना था कि यह देश को बाँटेगी, एकता के लिए खतरा होगी और अल्पसंख्यकों के लिए भी लंबे समय में हानिकारक होगी, उन्हें मुख्यधारा से अलग कर देगी.

उदाहरण 8. संविधान सभा में 'पृथक निर्वाचिका' का किसने समर्थन किया और क्यों? तथा इसका विरोध किन नेताओं ने किस आधार पर किया?

› पहला चरण: 'पृथक निर्वाचिका' के समर्थक को पहचानो - बी. पोकर बहादुर।

› दूसरा चरण: उनके समर्थन के पीछे के तर्क बताओ - अल्पसंख्यकों की विशेष पहचान, उनके प्रतिनिधित्व और हितों की सुरक्षा के लिए, गैर-मुसलमानों द्वारा मुसलमानों की ज़रूरतों को न समझ पाना।

› तीसरा चरण: विरोध करने वाले प्रमुख नेताओं के नाम बताओ - सरदार वल्लभ भाई पटेल और गोविंद वल्लभ पंत।

› चौथा चरण: विरोध के मुख्य तर्क समझाओ - इसे राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा माना गया, देश को बांटने वाली अंग्रेज़ों की चाल समझी गई, विभाजन और रक्तपात का कारण माना गया, और अल्पसंख्यकों के लिए भी आत्मघाती बताया गया जो उन्हें शेष समाज से अलग-थलग कर देगा।

उत्तर – बी. पोकर बहादुर ने 'पृथक निर्वाचिका' का समर्थन अल्पसंख्यकों के बेहतर प्रतिनिधित्व और उनकी विशेष ज़रूरतों को पूरा करने के लिए किया। इसका तीव्र विरोध सरदार पटेल और गोविंद वल्लभ पंत जैसे नेताओं ने किया, जिन्होंने इसे राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए खतरा तथा अल्पसंख्यकों के लिए भी आत्मघाती बताया।

उदाहरण 9. एन.जी. रंगा के अनुसार, 'असली अल्पसंख्यक' कौन थे और उन्हें किन चीज़ों की आवश्यकता थी?

› एन.जी. रंगा ने अल्पसंख्यक शब्द को आर्थिक आधार पर परिभाषित किया।

› उनके अनुसार, असली अल्पसंख्यक वे गरीब, दबे-कुचले लोग और आदिवासी थे जो समाज में शोषण का शिकार हो रहे थे।

› उन्होंने कहा कि इन लोगों को केवल कागज़ पर अधिकार देने से काम नहीं चलेगा।

› उन्हें 'सहारे' और 'एक सीढ़ी' की ज़रूरत है ताकि वे इन अधिकारों का सही मायने में उपयोग कर सकें।

› इसका मतलब है कि उन्हें विशेष सुरक्षा, सहायता और ऐसी परिस्थितियाँ देनी होंगी जिनसे वे मुख्यधारा में शामिल हो सकें और शोषण से बच सकें।

उत्तर – एन.जी. रंगा के अनुसार, असली अल्पसंख्यक गरीब, दबे-कुचले और आदिवासी लोग थे, जिन्हें सामाजिक न्याय और आर्थिक सहारों की आवश्यकता थी ताकि वे अपने संवैधानिक अधिकारों का वास्तविक उपयोग कर सकें।

उदाहरण 10. संविधान सभा में दलितों के अधिकारों के लिए मुख्य रूप से कौन-कौन सी माँगें रखी गईं?

› सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण माँग थी 'अस्पृश्यता' (अछूतपन) का पूरी तरह से उन्मूलन, यानी इसे खत्म करना।

› दूसरी बड़ी माँग थी कि दलितों को हिंदू मंदिरों में प्रवेश का अधिकार मिले, जो पहले वर्जित था।

› तीसरी माँग थी कि विधायिकाओं (विधानसभा, संसद) और सरकारी नौकरियों में दलितों के लिए सीटें आरक्षित की जाएँ, ताकि उन्हें प्रतिनिधित्व और बराबरी का मौका मिल सके।

उत्तर – संविधान सभा में अस्पृश्यता उन्मूलन, मंदिरों में प्रवेश, और विधायिका व सरकारी नौकरियों में आरक्षण की प्रमुख माँगें रखी गईं।

उदाहरण 11. संविधान की तीन सूचियों - केंद्रीय, राज्य और समवर्ती सूची - का क्या अर्थ है और इनमें कौन से विषय शामिल होते हैं?

› पहला कदम, हम समझेंगे कि 'केंद्रीय सूची' क्या है। इस सूची में वे विषय आते हैं जिन पर सिर्फ केंद्र सरकार ही कानून बना सकती है। जैसे, देश की रक्षा, विदेश नीति, रेलवे, मुद्रा, बैंक। ये ऐसे मामले हैं जो पूरे देश के लिए एक समान होने चाहिए, वरना बहुत गड़बड़ हो जाएगी।

› दूसरा कदम, 'राज्य सूची' को देखते हैं। इसमें वे विषय हैं जिन पर सिर्फ राज्य सरकारें कानून बना सकती हैं। जैसे, पुलिस, स्थानीय शासन (ग्राम पंचायतें), सार्वजनिक स्वास्थ्य, कृषि, सिंचाई। ये ऐसे विषय हैं जो हर राज्य की अपनी ज़रूरत के हिसाब से अलग हो सकते हैं।

› तीसरा कदम, 'समवर्ती सूची' है। यह थोड़ी ख़ास है। इसमें वे विषय आते हैं जिन पर केंद्र और राज्य, दोनों ही कानून बना सकते हैं। लेकिन अगर किसी विषय पर दोनों में मतभेद होता है, तो केंद्र सरकार का कानून ही मान्य होगा। उदाहरण के लिए, शिक्षा, वन, वन्यजीव संरक्षण, जनसंख्या नियंत्रण। शिक्षा का मामला ऐसा है कि इसमें पूरे देश के लिए कुछ नियम हों, लेकिन राज्य भी अपनी ज़रूरतों के हिसाब से कुछ बदलाव कर सकें।

उत्तर – संविधान की तीन सूचियाँ - केंद्रीय, राज्य और समवर्ती - शक्तियों के बंटवारे का आधार हैं। केंद्रीय सूची केंद्र को, राज्य सूची राज्यों को और समवर्ती सूची दोनों को कानून बनाने की शक्ति देती है, जिससे देश का शासन सुचारु रूप से चल सके।

उदाहरण 12. संविधान सभा में राष्ट्रीय भाषा के प्रश्न पर महात्मा गांधी का क्या दृष्टिकोण था, और इसके पीछे उनका क्या तर्क था?

› पहला चरण: महात्मा गांधी हिंदुस्तानी भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाने के पक्ष में थे।

› दूसरा चरण: हिंदुस्तानी हिंदी और उर्दू का मिश्रण थी, जिसे देश के बड़े हिस्से में लोग समझते थे।

› तीसरा चरण: उनका तर्क था कि यह भाषा विभिन्न समुदायों (हिंदू-मुसलमान, उत्तर-दक्षिण) को एकजुट कर सकती है क्योंकि यह बहुसांस्कृतिक और समावेशी थी।

› चौथा चरण: गांधीजी का मानना था कि राष्ट्रीय भाषा ऐसी होनी चाहिए जो आसानी से समझी जाए और जो सबकी

साझी संस्कृति को दर्शाए, न कि किसी एक वर्ग पर थोपी जाए।

उत्तर – महात्मा गांधी हिंदुस्तानी को राष्ट्रीय भाषा बनाना चाहते थे क्योंकि यह हिंदी और उर्दू का मेल थी, जिसे व्यापक रूप से समझा जाता था और जो विभिन्न समुदायों को एकजुट कर सकती थी।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। संविधान निर्माण की पृष्ठभूमि और चुनौतियों पर सीधे प्रश्न आते हैं। इसे ध्यान से समझना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर संविधान के 'पृष्ठभूमि' या 'चुनौतियों' से संबंधित प्रश्नों में आता है। इन घटनाओं को क्रम से याद रखें और उनका संविधान पर क्या प्रभाव पड़ा, यह समझना महत्वपूर्ण है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। संविधान सभा के गठन की प्रक्रिया, कांग्रेस और मुस्लिम लीग की भूमिका, और जनमत के प्रभाव जैसे बिंदुओं को अच्छे से समझकर जाना। अक्सर इस पर 5-6 नंबर का सीधा प्रश्न आता है!

• इन सभी प्रमुख व्यक्तियों के नाम और उनके विशिष्ट योगदान (जैसे 'प्रारूप समिति अध्यक्ष' अंबेडकर के लिए) को अच्छे से याद कर लें, यह बोर्ड परीक्षा में सीधे प्रश्न के रूप में आता है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'उद्देश्य प्रस्ताव' की तारीख, प्रस्तुतकर्ता, और इसके मुख्य बिंदु जैसे 'स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य', 'न्याय, समानता, स्वतंत्रता', और 'अल्पसंख्यकों के लिए प्रावधान' याद रखना, ये सीधे प्रश्न के रूप में आ सकते हैं.

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संविधान सभा के गठन और उसकी वैधता के मूल सिद्धांतों को दर्शाती है। सोमनाथ लाहिड़ी के कथन और नेहरू के जवाब को अच्छे से समझकर याद रखना।

• संविधान सभा में हुए बहसों से जुड़े सवाल, खासकर 'पृथक निर्वाचिका' पर हुए वाद-विवाद और विभिन्न नेताओं के तर्कों पर, बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं. इसे अच्छे से समझ लेना.

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'पृथक निर्वाचिका' के पक्ष और विपक्ष में दिए गए तर्कों को अच्छे से समझकर याद करें, क्योंकि यह सीधा प्रश्न अक्सर पूछा जाता है।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि एन.जी. रंगा ने अल्पसंख्यकों की परिभाषा कैसे दी और उनके अनुसार उन्हें किन चीज़ों की आवश्यकता थी। उनके विचार को अच्छे से समझकर लिखना, खासकर 'सीढ़ी' और 'सहारे' वाले उनके कथन का ज़िक्र ज़रूर करना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। डॉ. अंबेडकर के योगदान और अस्पृश्यता उन्मूलन से जुड़े संवैधानिक प्रावधानों को ज़रूर याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर शक्तिशाली केंद्र के पक्ष में दिए गए तर्क या तीन सूचियों के बारे में प्रश्न पूछे जाते हैं। इन पर ध्यान देना.

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें महात्मा गांधी के विचार, आर.वी. धुलेकर का पक्ष और गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों की चिंताओं को ध्यान से पढ़ना और समझना बहुत ज़रूरी है। अक्सर इस पर लंबे उत्तर वाले प्रश्न पूछे जाते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› संविधान: 26 जनवरी 1950 को लागू, 3 साल में निर्मित, विविधता में एकता का प्रतीक।

› आज़ादी पूर्व: भारत छोड़ो, नौसेना विद्रोह, विभाजन, रियासतें - सबने संविधान को आकार दिया।

› संविधान सभा: प्रांतीय संसदों द्वारा चुनाव, कांग्रेस प्रभावी, मुस्लिम लीग का बहिष्कार, जनमत से प्रभावित।

› नेहरू, पटेल, प्रसाद, अंबेडकर, मुंशी, अय्यर, राव, मुखर्जी - संविधान निर्माता।

› नेहरू का 'उद्देश्य प्रस्ताव' (1946): संविधान के मूल आदर्शों व रूपरेखा का आधार।

› संविधान सभा की संप्रभुता = जनता की इच्छा (लाहिड़ी का आरोप, नेहरू का जवाब).

› नागरिकों, उत्पीड़ितों, अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर गहन बहस; पृथक निर्वाचिका का मुद्दा.
› पृथक निर्वाचिका: बी. पोकर बहादुर ने समर्थन, पटेल-पंत ने राष्ट्रीय एकता हेतु विरोध किया।
› एन.जी. रंगा: 'असली अल्पसंख्यक' आर्थिक रूप से कमज़ोर, जिन्हें 'सहारा' चाहिए।
› अंबेडकर, दलित अधिकार: अस्पृश्यता उन्मूलन, मंदिर प्रवेश, आरक्षण (विधायिका, नौकरी)।
› केंद्र-राज्य शक्ति बंटवारा, 3 सूचियां, मजबूत केंद्र क्यों?
› राष्ट्रीय भाषा पर बहस: गांधी (हिंदुस्तानी) बनाम धुलेकर (हिंदी); गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों का भय।